SJIF Impact Factor - 5.54

E- ISSN 2582-5429

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

October 2021 Special Issue 03 Vol. I

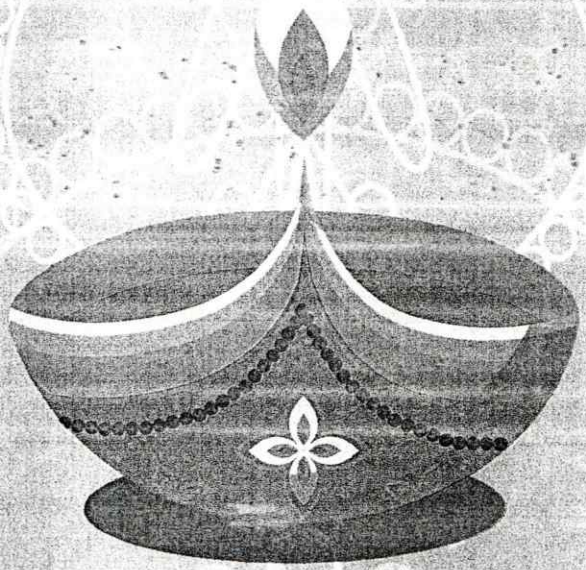

Chief Editor : Dr. Girish S. Koli, AMRJ

For Details Visit To - www.aimrj.com

Akshara Publication

E- ISSN 2582-5429

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal SJIF Impact- 5.54

October 2021 Special Issue 03 Vol. I

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

Special Issue 3 Volume I

October 2021

Akshara Publication

Plot No 143 Professors colony,

Near Biyani School, Jamner Road, Bhusawal Dist Jalgaon (Maharashtra) 425201

Website:www.aimrj.com Email:aimrj18@gmail.com

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal SJIF Impact- 5
AMRJ
October 2021 Special Issue 03 Vol. I

15

'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' उपन्यास में अभिव्यक्त किन्नरों की त्रासदी

श्रीमती. प्रिया मनोज गोसावी
सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग
विद्या प्रबोधिनी महाविद्यालय, विद्या नगर, पर्वरी-गोवा, 403501
ई-मेल:priyagosavi28@gmail.com मोबाइल नं: 93733326 / 8007170543

भारतीय समाज के बहुत से वर्ग विकृत परंपराओं के कारण त्रासदपूर्ण जीवन व्यतीत करने को विवश होते हैं, उनमें सर्वाधिक उपेक्षित वर्ग है -किन्नर। किन्नर शब्द ऐसे समाज के लिए प्रयुक्त होता है जो लैंगिक रूप से न नर होते हैं न मादा। लैंगिक दिव्यांगता के कारण यह शारीरिक और मानसिक समस्या उत्पन्न होती है। वर्तमान समय में इस प्रकार के जन्मे व्यक्तियों की संख्या भारत में लगभग 50 लाख है। किन्नर समाज के बारे में प्रायःसमाज बात करने से कतराता है और वह इनकी व्यथा व पीड़ा पर अपना मनोरंजन करता है। इन्हें हिजड़ा, नपुंसक, खोजा, जनखा, छक्का, अरावनी, खुसरा आदि नाम से भी जाना जाता है। अभी कुछ वर्ष पहले माननीय उच्चतम न्यायालय ने अपने फैसले में उपरोक्त शब्दों के स्थान पर 'थर्ड जेण्डर' के नाम से सम्बोधित किया है। इसीलिए अब इस समुदाय के लोगों को 'थर्ड जेण्डर' के नाम से पुकारा जाता है।

20 वी और 21वी सदी के बीच सेतु निर्मित करनेवाली लेखिका चित्रा मुद्गल हिन्दी साहित्य की वरिष्ठ कथाकार है। उनके उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' को 2018 में साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित किया गया। इस उपन्यास में किन्नरों की त्रासदी को चित्रा मुद्गल जी ने बड़ी गहराई से अभिव्यक्त किया है। यह उपन्यास मानवीय बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए लिखा गया एक अत्यंत मर्मस्पर्शी उपन्यास है।

प्रसिद्ध उपन्याकार चित्रा मुद्गल ने अपने उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' में यही दिखाने का प्रयास किया है कि समाज में किन्नरों की स्थिति अछूतों से भी बदतर है तथा वे नारकीय जीने में अभिशप्त है। 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' उपन्यास का प्रमुख पात्र बिन्नी उर्फ विनोद उर्फ बिमली अपनी माँ का लाड़ला, होशियार, तेज, पढ़ाई में अव्वल बालक है। धीरे-धीरे उसकी चेतना में यह उभरता है कि वह सामान्य बच्चों से अलग है। समय करवट लेता है और वह विनोद से बिन्नी बन जाने में मजबूर हो जाता है। वह अपनी माँ से बेहद प्यार करता है लेकिन माँ के पास नहीं रह पाता। वह एक तरफा पत्रों के माध्यम से अपनी माँ को अपने जीवन संघर्षों के बारे में बताता है। उसके दु:ख-दर्द से भरे तथा त्रासदीपूर्ण जीवन को इन्हीं पत्रों द्वारा पाठक जान पाते हैं। विनोद चाहता है कि किन्नर पढ़-लिखे और समाज की मुख्य धारा में सम्मिलित हो लेकिन वह राजनेताओं की कठपुतली बनकर उनके षड्यंत्र का शिकार बन जाता है।

'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' उपन्यास के माध्यम से लेखिका चित्रा मुद्गल ने उपन्यास में आयी घटनाओं के द्वारा किन्नरों के जीवन से संबंधित अनेक त्रासदियों को दर्शाया है। जो निम्नवत रूप से देखी जा सकती है।

1) **किन्नरों को परिवार द्वारा अस्वीकृत करना** – परिवारवालों को जब यह ज्ञात होता है कि उनकी संतान जननांग विकलांग है तो वे उसे अपने आपसे दूर करते हैं तथा समाज भी उन्हें एक आम इन्सान की तरह जीवन व्यतीत करने से वंचित करते हैं। बचपन में जब उनके लिंग दोष के बारे में पता ना चले तब तक उन्हें बहुत प्यार से पाला-पोसा जाता है, उनसे लगाव होता है। वैसे ही समाज में भी वो किसी का दोस्त, सदस्य तथा आम मनुष्य की तरह अपना जीवनयापन करता है। परंतु जैसे ही उसके लिंग का ज्ञात होता है, सारे उन्हें बहिष्कृत करते हैं। वहीं लगाव एक पल में अलगाव में परिवर्तित हो जाता है। तब ना कोई उसे कोई अपनी संतान, भाई-बहन, दोस्त स्वीकार करता है नाहिं समाज उसे अपनाता है। उन्हें उसी पल परिवार तथा समाज द्वारा निष्कासित किया जाता है। इस समाज में हर एक व्यक्ति को सम्मान दिया जाता है परंतु एक किन्नर को जिस बात के होने का, वो अपराधी ना होने के बावजूद भी उन्हें एक अपमानजनक जीवन व्यतीत करना पड़ता है। विनोद को भी उसके परिवारवालों द्वारा 14 वर्ष की उम्र में चंपाबाई को सौंप दिया जाता है। विनोद अपने परिवार को ढूंढते हुए वापस उनके पास ना आए इसलिए

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
SJIF Impact- 5.54
October 2021 Special Issue 03 Vol. I

घर बदल दिया जाता है। परिवार द्वारा अस्वीकृत होने के कारण उसे अपनी माँ को पत्र लिखने के लिए पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा के पते का सहारा लेना पड़ता है। वह माँ से शिकायत करते हुए कहता है - "तूने, मेरी बा, तूने और पप्पा ने मिलकर मुझे कसाइयों के हाथ मासूम बकरी सा सौंप दिया।"[1] यहाँ विनोद की अंतर्मन की वेदना दृष्टव्य होती है।

2) **शिक्षा विहीन जीवन व्यतीत करना** – विनोद अपनी प्रारंभिक शिक्षा से यह साबित करता है कि वह किसी भी सहपाठियों से कम नहीं है। वह पढ़ाई-लिखाई, खेल-कूद में अव्वल आता है। शारीरिक या मानसिक बल हो या और कोई विषय वह किसी भी आम इंसान से तनिक भी भिन्न नहीं, फिर परिवार और समाज के इस परित्याग का कारण उसके समझ में नहीं आ रहा है। वह अपनी माँ को लिखता है -"जननांग विकलांगता बहुत बड़ा दोष है लेकिन इतना बड़ा भी नहीं कि तुम मान लो कि तुम धड़ का मात्र वही निचला हिस्सा भर हो। .... तुम्हारे हाथ-पैर नहीं हैं। हैं, हैं, हैं, सब वैसा ही है, जैसे औरों के हैं। यौन सुख लेने-देने से वंचित हो तुम, वात्सल्य सुख से नहीं !"[2] किन्नरों को समाज से अलग एक कठघरे खड़ा करनेवाले हमारे सामाजिक व्यवस्था के दोहरे मापदंड को उजागर करते हुए विनोद ने प्रश्न चिन्ह लगाया है। साथ ही उसे भली-भांति ज्ञात है कि "पढ़ाई ही हमारी मुक्ति का रास्ता है। कोई रास्ता ही नहीं छोड़ा गया है हमारे लिए।" यहाँ पर शिक्षा ही भविष्य में उनको सम्मानित जीवन देगी इसका विनोद को पूरा विश्वास है।

3) **सम्मानजनक जीवन जीने से वंचित-** यह उपन्यास विनोद नामक एक युवक की कहानी है जिसे किन्नर होने के वजह से जबरदस्ती घर से निकाल दिया जाता है। उसके परिवारवाले दुर्घटना में उसकी मृत्यु हुई ऐसे लोगों को बताते हैं। किन्नर समुदाय में आकर उसके सपने बिखर जाते हैं। वह हिजड़ों के बीच रहने के लिए मजबूर हो जाता है। विनोद से वह बिन्नी बन जाता है। लेकिन उसने अपने जीवन-मूल्यों से समझौता नहीं किया है। विनोद अपने परिवार से बहुत प्यार करता है और अपनी माँ के प्रति उसका प्रेम बहुत ही गहरा है। वह माँ से सवाल करते हुए कहता है कि, "जिस नरक में तूने और पप्पा ने धकेला है मुझे, वह एक अन्धा कुआं है जिसमें सिर्फ सांप-बिच्छू रहते हैं। सांप-बिच्छू बनकर वह पैदा नहीं हुए होंगे। बस ! इस कुएं ने उन्हें आदमी नहीं रहने दिया।"[3] इस उद्धरण से यह ज्ञात होता है कि विनोद को समाज में सम्मानित जीवन जीने में वंचित किया गया और उसे नारकीय जीवन जीने में मजबूर किया गया है।

4) **असमानता और भेदभाव से भरी जिन्दगी जीने में अभिशप्त** - घर-परिवार से दूर होना इससे बड़ा दंश और कुछ भी नहीं है। प्रत्येक किन्नर इसके लिए अभिशप्त है। विनोद के 14 वर्ष की उम्र में विस्थापन की त्रासदी पूरे जीवन को झकझोर डालती है। एक पल भी वह घर की यादों को नहीं भूलता। बाहर की दुनिया की क्रूरता तथा यातनाओं से उसे गुजरना पड़ा इसका लेखा-झोंका अपने पत्रों के माध्यम से वह अपनी बा को बताता है। "कभी-कभी मैं अजीब सी अंधेरी बंद चिमगादड़ों से अटी सुरंग में स्वयं को घुटता हुआ पाता हूं। बाहर निकलने को छटपटाता मैं मनुष्य तो हूं न ! कुछ कमी है मुझमें इसकी इतनी बड़ी सजा !"[4] लेखिका ने विनोद के छटपटाहट के माध्यम से उन अनेक किन्नरों के जीवन की त्रासद पीड़ा को दर्शाया है।

5) **इच्छा के विरुद्ध जीवनज्ञापित करने में विवश** – किन्नरों को परिवार और समाज द्वारा किया गया परित्याग उन्हें पथभ्रष्ट होने में कोई कसर नहीं छोड़ता। इनके समुदाय में सरदार और गुरु होते हैं। उनके साथ हर एक किन्नर की शादी करवा दी जाती है। उनको ही वे अपना पति मानते हैं। वे इन किन्नरों को शारीरिक एवं मानसिक यातनाएं देते हैं। इसके बारे में बताते हुए विनोद अपनी माँ से कहता है, "उनके लात, घूंसे, थप्पड़ और कानों में गर्म तेल सी टपकती किसी भी संबंध को न बख्शने वाली अश्लील गालियों के बावजूद न मैं मटक-मटक कर ताली पीटने को राजी हुआ, न सलमे-सितारे वाली साड़ियां लपेट लिपिस्टिक लगा कानों में बुंदे लटकाने को।"[5] विनोद को यह सब करना अच्छा नहीं लगता इसलिए वह स्वेच्छा से गाडियाँ धोकर जीवनयापन करता है लेकिन किन्नरों का परंपरागत पेशा स्वीकार्य नहीं करता।

6) **समाज द्वारा अपनाने की उम्मीद** – समाज ने जिस दल-दल में किन्नर समुदाय को डाल दिया है, उससे उभरने के बारे में विनोद इस प्रकार से बदलाव लाने की कोशिश करता है "किन्नर चाहे जिस भी वर्ग की संतान हों, चाहे जिस जाति-बिरादरी, समुदाय से संबंधित हो, उसी जाति-वर्ग के अनुसार उन्हें अपना सामान्य जीवन जीने की सुविधा मिलनी चाहिए। ....शिक्षित और स्वावलंबी होकर ही वह समाज की मुख्यधारा से जुड़ सकते है"।[6] विनोद के माध्यम से लेखिका ने प्रगतिशील विचार हमारे समक्ष रखे हैं कि - "जरूरत है सोच बदलने की। संवेदनशील बनाने की। सोच बदलेगी, तभी जब अभिभावक अपने लिंग

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
SJIF Impact-
October 2021 Special Issue 03 Vol. I

दोषी बच्चों को कलंक मान किन्नरों के हवाले नहीं करेंगे। उन्हें घूरे में नहीं फेकेंगे। ट्रांसजेंडर के खांचे में नहीं ढकेलेंगे।"[7] इस प्रकार अगर समाज किन्नरों को अपनाएगा तो एक समृद्ध समाज का निर्माण हो सकता है।

7) **किन्नरों के साथ अमानवीय व्यवहार** – बलात्कार जैसा घिनौना कृत्य आज तक हमनें एक स्त्री या पुरुष के साथ किया गया ऐसा सुना था। पर किन्नरों पर भी बलात्कार होते है यह इस उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने दर्शाया है। विनोद की दोस्त पूनम जोशी उससे बेइंतिहा प्यार करती है। उसे विधायक के भतीजे के जन्मदिन पर नाचने के लिए बुलाया जाता है। उसके नाच की अदाकारी से जोश में आकर शराब के नशे में उन्मत्त विधायक का भतीजा और उसके दोस्त शो के बाद उसके कपड़े बदलने की कोठरी में घुसकर उसका जननांग देखने के कुतूहल फिर उस नन्हे से छिद्र को बड़ा करने के फौरी रौ में उसे तहस-नहस कर उसके साथ निर्दयता से बलात्कार किया जाता है। यह पूरी घटना जानकर भी विधायक तिवारी के जरिए बच्चों को कहीं छिपा देते है और खुद फार्म हाऊज पे बैठ जाते है और पुलीस को खबर न करकर पूनम को अस्पताल में भेज देते है।

8) **राजनीति के षड्यंत्र का शिकार** – राजनीति में किन्नरों को वोटों के नाम पर इस्तेमाल किया जाता है। इस उपन्यास में राजनीति के शतरंज का मोहरा विनोद बनता है। विनोद के आगे बढ़ने और पढ़ने की ललक को देखकर पूनम विधायक से सहायता की प्रार्थना करती है। विधायक उसे कंप्यूटर का प्रशिक्षण देकर नौकरी देने का प्रस्ताव रखता है। विनोद और पूनम इस बात से बेखबर होते है कि उनका राजनीति में इस्तेमाल होने जा रहा है। विनोद को इस बात का एहसास तब होता है जब उसे चंडीगढ़ भेजकर किन्नर समुदाय को संबोधित करने, आरक्षण की मांग करने, धरना धरने और अंशन पर बैठने की सलाह दी जाती है। परंतु विनोद बड़ी समझदारी से अपने किन्नर समुदाय को लेकर सरकार की इच्छाओं को पूर्ण होने नहीं देता। वह चाहता है किन्नरों को आरक्षण किसी तीसरी श्रेणी में न देकर बाकी लोगों की तरह सामान्य श्रेणी में ही दिया जाय ताकि किन्नरों और मुख्य धारा के बीच और भी गहरी खाई न पनपे। विनोद अपने समुदाय को संबोधित करते हुए उनके हित, उनकी पीड़ा, उनके अधिकार और अन्य सभी बिन्दुओं की बात करता है जिससे उसके अपने लोगों का भला हो सकें। लेकिन राजनीतिज्ञ अपनी स्वार्थ पूर्ति न होता देख उसकी निर्ममता से हत्या करवा देते हैं। उसकी फूली लाश पुलीस को बरामद होती है तो उसकी शिनाख्त भी करना मुश्किल हो जाती है। इस प्रकार से किन्नर की जीवन की त्रासदियों को लेखिका ने उपन्यास में बखूबी से चित्रित किया है।

चित्रा मुद्गल ने किन्नर समुदाय की दीन-हीन परिस्थिति को हमारे सामने प्रस्तुत ही नहीं किया बल्कि इसे लेकर एक आशावादी सोच हमारे समक्ष रखती है। यह किन्नर समुदाय आज तक भले ही दयनीय और नारकीय जीवन जीने में अभिशप्त रहे हो, किंतु इस समुदाय में अपनी इच्छा शक्ति एवं समाज की मुख्यधारा के लोगों के सोच में बदलाव अवश्य आएगा। लेखिका विनोद के माँ के माध्यम से कहती है, "समाज को ऐसे लोगों की आदत नहीं है और वे आदत डालना भी नहीं चाहते पर मुझे विश्वास है, हमेशा ऐसी स्थिति नहीं रहने वाली। वक्त बदलेगा। वक्त के साथ नजरिया बदलेगा।"[8] इस उद्धरण के माध्यम से एक नई उम्मीद की किरण लेखिका हमारे सामने रखती है।

अंततः यह कह सकते है कि समाज को अपने सोच में परिवर्तन लाना होगा। नहीं तो, कब तक ऐसी असंख्य माँ तथा परिवार लोकापवाद के भय से अपने किन्नर बच्चों को परिवार से बहिष्कृत करने के लिए विवश करेंगे ? वे भी इंसान हैं, उन्हें भी आम लोगों की तरह भावनाएं हैं, वे भी अपने परिवार के साथ जीवन व्यतीत करना चाहते हैं, वे भी समाज के साथ चलने की इच्छा रखते हैं। तो इस समुदाय को इनके अधिकारों से क्यों वंचित करें ? सभी को इनके प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखने की जरूरत है और यह सोच परिवार से शुरू होनी अति आवश्यक है। उन्हें किन्नर होने के नाते परिवार से अलग ना करें। समाज को यह समझने की आवश्यकता है कि भले ही वे जननांग विकलांग हो, उन्हें घर, परिवार तथा समाज से तिरस्कृत एवं बहिष्कृत नहीं करना चाहिए बल्कि उनको भी सम्मान की जिंदगी जीने का अवसर प्रदान करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा, चित्रा मुद्गल, सामायिक प्रकाशन, संस्करण 2016, नई दिल्ली, पृ.11
2. पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा, चित्रा मुद्गल, सामायिक प्रकाशन, संस्करण 2016, नई दिल्ली, पृ.50
3. पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा, चित्रा मुद्गल, सामायिक प्रकाशन, संस्करण 2016, नई दिल्ली, पृ.11
4. पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा, चित्रा मुद्गल, सामायिक प्रकाशन, संस्करण 2016, नई दिल्ली, पृ.30

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
SJIF Impact- 5.54
October 2021 Special Issue 03 Vol. I

5. पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा, चित्रा मुद्गल, सामायिक प्रकाशन, संस्करण 2016, नई दिल्ली, पृ.9
6. पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा, चित्रा मुद्गल, सामायिक प्रकाशन, संस्करण 2016, नई दिल्ली, पृ. 195-196
7. पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा, चित्रा मुद्गल, सामायिक प्रकाशन, संस्करण 2016, नई दिल्ली, पृ.112
8. पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा, चित्रा मुद्गल, सामायिक प्रकाशन, संस्करण 2016, नई दिल्ली, पृ.10
9. किन्नर कथा साहित्य में किन्नर समाज, सं. डॉ. दिलीप मेहरा, माया प्रकाशन, संस्करण 2018, नई दिल्ली, पृ.174
10. थर्ड जेन्डर : कथा आलोचना, सं. डॉ. एम. फ़ीरोज खान, अनुसंधान पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, संस्करण 2017, कानपूर, पृ.93

■ ■ ■

AMRJ